उज्वला गांधी
अंकलेश्वर मो.- 9429986265

आज पूरा विश्व कषायोकी भट्टीमें जल रहा है। विषयभोगों के पिछे अंधी दौड लगा रहा है। विषयभोगों का कारण पैसा मानता है और इसलीए पैसों के पीछे पागल हो रहा है। सही - गलत, अच्छा - बुरा कुछ भी सोचे बिना पैसों के पीछे या भोगों के पीछे पडा है। ऐसी परिस्थिति में जैन समाज भी उससे अछुता नही रहा है। साथमें मोबाईल, टीवी और कॉम्प्युटर ने अग्निमें घी डालने का काम कीया। जैन बच्चे जिनमंदिर और जैनधर्मके स्तंभ है। पत्थरोंके बडेबडे मंदिर कितने ही बनालो उसमें भक्त नही होंगे तो वो खंडहर बन जाएंगें। दुनिया के इस बहते बहावमें हमारे बच्चे बह न जाए इसका ध्यान रखना हमारा कर्तव्य है। इतना ही नही हमारे बच्चोंको सच्चा तत्वज्ञान मीले और वो मोक्षमार्ग के पथीक बने यह भी इच्छनीय है। और इसीलीए जरूरत है पाठशालाओं की। पाठशाला के मूल हेतु देखे तो,

(1) बच्चे अन्य संस्कारो से बचकर जैनधर्म के संस्कारोंको ग्रहण करे। जैसे सिनेमाहोल से बचकर मंदिरोमें जाये, पार्टीयों में न जाकर पाठशाला या प्रवचन में जाये। होलीन मनाकर अस्टानीका मनाएं। फटे जिन्स छोडकर सही पहनावा पहने आदि - आदि

(2) बच्चों को तत्वज्ञान मीले और साथमें चारों अनुयोगों का ज्ञान मीले। और पाठशाला का जो अभ्यासक्रम है "बालबोध आदि" उसको माध्यमसे यह कार्य अच्छेसे हो सकता है। इन्ही बच्चोमेंसे आगे विद्वान बनेंगे।

(3) बच्चे सदाचारी बनकर, अन्याय, अनीती, अभक्ष के त्यागी बने। अभक्ष छोडे छोटे नीयम लेंगे तो भविष्यमें इन्हीमेंसे व्रती श्रावक या आचार्य उपाध्याय, साधु बनेंगे।

(५) बच्चे धर्म और ~~धर्म की~~ ~~पाठशाला~~ धर्मायतनों के रक्षक बने और धर्म की परंपरा को आगे बढ़ाए। हमारे पूर्वजों ने हमें जो धर्म की विरासत सौंपी है उसको आगे बढ़ाने के लिए यही बच्चे कल के रूप बनेंगे।

तो इसप्रकार अनेक हेतुओं को हम पाठशाला के माध्यम से सिद्ध कर सकते हैं। यहाँ प्रश्न हो सकता है कि बच्चे पूरे दिन स्कूल में पढ़ते रहते हैं और ऊपर से पाठशाला की पढ़ाई बच्चे पसंद करेंगे। इसका उत्तर देते हुए मैं कहूंगी कि हम लोगों को पाठशाला को रुचिकर बनाना पड़ेगा जिससे बच्चे खुशी-खुशी पाठशाला आए, और उसके लिए कुछ बिंदुओं का हमें ध्यान रखना पड़ेगा जैसे...

(1) आजका ज़माना टेक्नोलोजी का है हमें उसका उपयोग करना चाहिए। हमारे अनेक साधर्मी भाईओंने प्रथमानुयोग की कथाएं या फिर संवादों के माध्यम से आचरण या सिद्धांतों पर छोटीछोटी एनीमेशन फिल्में बनाई हैं। उसका उपयोग करके हमें टीवी पर कनेक्ट करके बच्चों को दिखाना चाहिए। हम बोलते रहे और बच्चे सुनते रहे तो वो बोर होते हैं। पर वही चीज जब टीवी पर देखते हैं तो मजा लेकर देखते हैं। ~~और~~ करणानुयोग जैसे कठिन विषय भी ~~[illegible]~~ वीडियो के माध्यम से सरलता से बच्चे सीख लेते हैं। इसप्रकार टेक्नोलोजी के उपयोग से हम हसते हसते ज्ञान परोस सकते हैं।

(2) हम बच्चों को थोड़े थोड़े समय पर गेम खिलाकर पढ़ाई की निरसता को रुचिकर बना सकते हैं। जैसे, परीक्षा बच्चों को बिलकुल पसंद नहीं होती, तो परीक्षा का गेम में

परिचतोंसे करवाया जाई। जैसे "एक परीक्षाई देना न कहकर एक गेम खेलेंगे तैयारी करलेना।" ऐसा कहा जाई और परीक्षा के समय बच्चोंको टीम बनाकर प्रश्न पूछ जाय और जवाब देने वालोंको पॉइन्ट दिये जाय। ज्यादा पॉइन्ट वालेको विजेता घोषित किया जाय। इसप्रकार समयसमय पर अलग अलग गेम खिलाकर खेलते खेलते ज्ञान दिया जाय।

(3) सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यमसे बच्चोंको ज्ञान परोसा जाय। कार्यक्रम के समय बच्चोंके माता-पिता और समाजके सदस्यो को ~~कुछ~~ उपस्थित रखेजाय ताकी बच्चे क्या पढ़रहे है सबको पता चले। कार्यक्रममें छोटेछोटे नाटक एकपात्र अभिनय, या फिर जैनधर्म के सिद्धांतो को कार्यक्रममें समाहित किए जाय। जैसे बच्चोंका 6 द्रव्यों का ज्ञान देनेके लिए एक-एक बच्चेको एकएक द्रव्य बनाकर द्रव्यका परिचय दिया जाय। इस प्रकार कठिन विषय भि बच्चे सिखलेते है।

(4) समय-समय पर सामूहिक पूजन-अभिषेक का कार्यक्रम रखा जाय। जिसका पूरा संचालन बच्चोंद्वारा करवाया जाय और शिक्षक मार्गदर्शक बने। पूजक, पूज्य और पूजा का परिचय देकर पूजा और उससे जुड़ी बातों को बताया जाय। बिचबिच में प्रश्न पूछकर पूजकको सक्रिय बनाया जाय।

(5) ~~नजदीक~~ नजदीक के क्षेत्रोंपर लगने वाले बाल शिबिरोंमे जाने के लिए बच्चोंको प्रोत्साहित कियाजाई। हो सके तो शिक्षक बच्चोंको लेकर खुद शिबिरोंमें जाय। जिससे बच्चोंको विशेष ज्ञान प्राप्त हो। विशेष ~~विद्वा~~ विद्वानों का लाभ मिले। साथिके सामुहिक में रहनेकी भावना बढ़े।

बच्चे प्रतिकूलता में भी रहना सीखे

(6) योग्यता अनुसार कभी कभी ~~स्थान~~ पाठशाला की यात्रा का आयोजन किया जाय। यात्रा के समय उस तीर्थक्षेत्र का महीमा और परीचय दिया जाय साथमे अन्य तीर्थों का भी महीमा और परीचय बताया जाय। यात्रा के समय कुछ रचनात्मक प्रवृती कराई जाए जिससे बच्चे सक्रीय रहे।

(7) जब हम कोई कार्य करते है और उसका फल दिखता है तो कार्य करने का विशेष आनन्द आता है। नही तो कार्य बोज बनजाता है। उसीप्रकार बच्चो को जब पुरस्कार मिलता है (खासकर छोटे बच्चो को) तब पाठशाला आनेका आनंद बढजाता है। इसलीए होसके उसप्रकार पुरस्कार देकर बच्चो को प्रोत्साहित किया जाय।

कभी कभार मिथ्यामोक्ष विचारकर हो सके उसप्रकार नास्ते की भी व्यवस्था रखा जाय। छुट्टीयों के समय पूरे दिनकी पाठशाला रखकर मानो शिबिर जैसा आयोजन किया जाय।

इसप्रकार अलग अलग तरीको से स्थान देनेमें विविधता लाकर बच्चों को ध्यान दिया जाये तो अवश्य वो निरस न रहकर रोचक बनेगा और हमारे ~~पाठशाला~~ पाठशाला चलाने का प्रयोजन सिद्ध होगा।

प्रश्न यह उठता है की ऐसे काम छोटे छोटे बच्चोसे करवाने के लीए शिक्षक भी तो अच्छे होने चाहिए। उनमे भी कुछ विशेषताएं होनी चाहिए। तो मै कहुंगी की अवश्य ऐसे कार्य के लिए कुछ विशेषता वाले शिक्षक ही चाहिए।

(1) सर्व प्रथम चाहिए कि पाठशाला का शिक्षक देवशास्त्रगुरु या जैन धर्म का दृढ श्रद्धानी

होना चाहिए खुद देवशास्त्रगुरु में श्रद्धावान न हो तो बच्चोंको गृहितमिथ्यात्व से कैसे बचाएगा?

(२) दूसरा शिक्षक जैनधर्म के मूल सिद्धान्तो का ज्ञाता होना चाहिए अगर ऐसा नहि होगा तो विपरीत बात सिखा सकता है जैसे रागमें धर्म बताना या हिंसामें धर्म बताना और ऐसा होने पर बच्चों का बुराइ होगा। शास्त्रोमें भी कहाँ है कि "कषायोकी मंदता आदि कितने ही गुणोवाला होनेपर भी उत्सुत्रभाषी वक्ता छोडने लायक है। जैसे भोजसाहित होनेपर भी सर्प बुराइ होता है।" इसलिए पाठशाला का शिक्षक जैनधर्म के मूलसिद्धान्तो का ज्ञाता चाहिए।

(३) शिक्षक पाठशाला के बच्चे या उनके परिवार के प्रति किसी भी प्रकारकी आशा से रहित होना चाहिए क्योंकी जो आशावान होगा तो बच्चोको सही ज्ञान नही दे पाएगा। उनके अनुसार ही वचन कहेगा।

(४) और शिक्षक सहनशिल होना चाहिए क्योंकी समाजमें तरहतरह के लोग होते हैं और वो पाठशाला को लेकर कुछ न कुछ बोलते रहेंगे। तब इसेलेकर पर गुस्सा करेगा तो पाठशाला ही बंद हो जाय इसलिए शिक्षक अलग अलग बातों को शांतिसे सहने वाला चाहिए।

(5) शिक्षक कषायोकी मंदतावाला चाहिए ~~किसे~~ ताकि बच्चे भले कर आज्ञा नही माने होमवर्क न करे तबभी गुस्सा होकर बच्चोसे ~~कुछ~~ गलत व्यवहार न करे। जिससे पाठशाला शिक्षक दोनो की गरीमा बनी रहे। साथमें क्रोध होगा तो बच्चे शिक्षक से डरेंगे तो शिक्षा कैसे के पायेंगे? इसलीए शिक्षक मंद कषायी चाहिए।

(6) शिक्षक बच्चों के अनेक प्रकार के प्रश्नोको सहने वाला चाहिए और धैर्य तथा शांतिसे प्रश्नोके उत्तर देने वाला चाहिए। साथमें स्वयं प्रश्न उठाकर

पुछने वाला चाहिए। जिससे बच्चों का ध्यान बढे।

(7) और बहोत जरूरी है कि शिक्षक सदाचारी हो। क्योंकि वह खुद यदि रात्रीभोजन करता हो बच्चोको रात्रीभोजन त्याग कैसे सिखायेगा, खुद बाजारका खाता हो तो बच्चोको अभक्ष त्याग कैसे करवायेगा। एकबार गांधीजी के पास एक महिला अपने 8 सालके बच्चे के साथ पहुचा और कहाँ, बापू यह बालक गुड बहोत खाता है, उसकी सेहत खराब होती हैं। उसे समझाइए तब गांधीजी ने कहाँ, आठ दिनके बाद आना। वह औरत आठ दिनके बाद आयी तब बापू ने कहां। बेटा ज्यादा गुड खाना अच्छा नही है, कम करदो और कहाँ आप जाइए। तब वह महिला बोली यह बात आप आठदिन पहले भी तो बता सकते थे। आठ दिन बाद क्यूं बुलाया। तब गांधीजी ने कहाँ तब मैं खुद ज्यादा गुड खाता था ये आठ दिनमें मैने गुडखाना कमकीया, तब जाके बालकको बोल सका।

यह दृष्टांतसे समझमे आता है की शिक्षक सदाचारी नही होगा तो बच्चो पर प्रभाव नही पडेगा। बच्चे कोई बात नही मानेगें।

(8) शिक्षक मितवान, न्यायी और स्पष्टवक्ता, साथमें मधुरभाषी हो। मधुर वचन सबको अच्छे लगते है। कर्कश वचन कीसीको नही सुहाते।

इसप्रकार अनेक गुणोका धारक पाठशाला चलाता है तो हमारे पाठशाला चलानेका हेतु अवश्य पूर्ण होगा।

जब हम कोई अच्छा कार्य करने जाते है तो विघ्न भी अवश्य आते है ऐसे ही पाठशाला चलानेमे भी अनेक दिक्कते आति है।

जैसे बच्चोंकी लौकिक शिक्षा का भार इतना बढ़गया है कि उनके लिए पाठशाला के लिए समय ही नही रहता और मातापिता भी लौकिक शिक्षा को ज्यादा महत्व देते है बादमें पाठशाला। दूसरा सारे बच्चे अलग - अलग स्कूल में जाते है। इसलिए सबके कुछ बच्चों को हमेशा परीक्षा रहती है। और किसीके, क्लास बढ़ा ही रहती है। और समाज में विरोधियों की कमी है नही, उनको विरोधकरके पाठशाला बंद करवानेमेही रस रहता है। छुट्टीयाँ हो तब घूमना करना चलता है। इसप्रकार पाठशाला में कटौती होता रहती है।

लेकीन निराश होने की आवश्यकता नही संसार है मुसिबते तो आयेगी पर उसके बीच हमे अपना काम करना है। हम लौकिक कामोमें, कितनी मुसीबतो का सामना करते है। यहाँ क्यूं डरना। मुसिबतो को देखकर डर जाए वो मुसाफिर नही होतो। हमें भी अपना काम चालू रखना है और जिनशासन की प्रभावनाम अपना हाथ लगाना है। जिनशासन के सैनिक तैयार करने है। पूरे देश मे जितनीभी पाठशाला चलती है उन सबको मेरी शुभकामनाई

जय जिनेन्द्र